"उपसंहार"

उपसंहार

प्रस्तुत शोध-प्रबंध का उद्देश्य चित्रा जी के कहानियों में चित्रित नारी-विद्रोह का विवेचन रहा है। अपने साहित्य के माध्यम से चित्रा जी ने समाज के सभी वर्गों की समस्याओं को उजागर किया है। कहानी उपन्यास आदि सभी विधाओं में अपनी प्रतिभा दिखाई है। उनका साहित्य पाठको को मात्र आत्मविभोर ही नहीं करता बल्कि उसे सामाजिक परिस्थितियों पर सोचते के लिए प्रेरित करता है। चित्रा जी का यह साहित्य समान और सामाजिक परिवेश का एक अत्यंत यथार्थ चित्र दर्शाता है। उनके साहित्य में वर्तमान यथार्थता के साथ-साथ सामाजिक, पारिवारिक अन्याय के प्रति क्रोध है। पारंपारिक सठ्ियों को बदलने का प्रयास है। समाज, परिवार और संस्कृति पर प्रभाव करने वाले घटको को अत्यंत कम एवं तटस्थता से दिखाने का साहस है। चित्रा जी की यह साहित्यिक विशेषत: ही उनके साहित्य के प्रति पाठको के मन में आत्मियता को बढावा देती है। प्रस्तुत शोध-प्रबंध लेखन में चित्रा जी के पारिवारिक एवं साहित्यिक जीवन के साथ उनके साहित्य में चित्रित नारी-विद्रोह का विवेचन करने का प्रयास किया है। इसीके अध्ययन अंतर्गत जो तथ्य सामने आए है वे इस प्रकार है।

चित्रा जी एक अत्यंत मेधावी, सशक्त विचारों की सिद्ध हस्त लेखिका है। अपने साहित्य के माध्यम से पाठको के मन पर अपने विचारों का प्रभाव छोड़ने वाली इस लेखिका जीवन का उसके साहित्य पर अत्यंत गहरा प्रभाव हुआ है। सामंती विचारों वाले अत्यंत संपन्न परिवार में उनका जन्म हुआ है। पारिवारिक परिवेश सामंती विचारों का होने पर भी उनके विचारों में यह प्रभाव नहीं दिखाई देता है। स्वभाव से अत्यंत कोमल होने के कारण शिकार, नेमबाजी, घुडसवारी जैसे साहसी खोलो से अधिक कला और साहित्य में उनका मन अधिक रमता था। परिणामत: उनका यह कोमल मन साहित्य और कलाओं में ही अधिक रमने लगा। अपने किशोरावस्था में ही उन्होंने साहित्य लेखन का प्रारंभ किया और कदम-दर-कदम उनका साहित्य बढता चला गया अत्यंत कम अवधी में ही वह एक लेखिका, पत्रकार, समाजसेविका आदि रूपों में काफी शोहरत भी प्राप्त की कर चुकी है। अपने साहित्य के अतिरिक्त अन्य गतिविधिओं में भी इतनी कुशल सिद्ध हुई है कि उन्हें देश-विदेश में अनेक सम्मानों से नवाजा गया है।

चित्रा जी का साहित्य मात्र किसी एक व्यक्ति पक्ष या सामाजिक पक्ष को नजर में रखकर नहीं लिखा गया है। बल्कि समाज के सभी पक्षों पर सभी वर्गों पर अपने विचार प्रस्तुत किए है। समाज और परिवार से जुडी सभी समस्याओं को दर्शाया है। परिवार से जुडी समस्याओं का चित्रण करते हुए उन्होंने उस पर होनेवाले सामाजिक पक्ष को भी चित्रित किया है। अकेलेपन और विखंडन की पीड़ा सहती हमारा पारंपारिक परिवार-विचार पद्धती का अत्यंत सशक्त चित्रण करते हुए उन्होंने समाज में बिघडती आर्थिक स्थिती, राजनीतिका, नारीयों की स्थितीयों का भी समावेश किया है। जो पाठकों के अपने इर्द-गर्द रोज घटने वाली घटनाओं के प्रति एक सशक्त विचार प्रदान करती है।

नारी जीवन के प्रत्येक पक्ष को चित्रा जी ने अपने साहित्य के माध्यम से दिखाया है। जिसमें उसके अन्य पारिवारिक रूप-के साथ-साथ अन्य सामाजिक रूप का भी समावेश होता है। अब तक एक कोमल हृदया, परंपरा को कसम के तरह मानकर जीवन यापन करने वाली नारी चित्र चित्राजी के साहित्य में आकर बदलता है। वह अपने पारंपारिक विचारों के साथ-साथ अपने व्यक्तिगत जीवन के तरफ ध्यान देने लगी है। अधिकार, अस्मिता के प्रति जागृत बनी यह नारीयाँ अपने साथ होने वाले अन्याय के विरुद्ध विद्रोह के लिए समक्ष बनती दिखाई है। सदियों से चली नारी को अबला मानकर अन्याय और दमन का कार्य करने वाले सामाजिक परंपरा का छेदन चित्राजी ने किया है। उनके साहित्य की नारीयाँ अपने अधिकारों के लिए विद्रोह करती हुई दिखाई देती है। परिवार और समाज में अपने विविध कर्तव्य और भूमिकाएँ निबाहते हुए वह अपने व्यक्ति रूप को भूल नहीं पाती है। वह समाज और परिवार में एक वस्तु के अपेक्षा एक व्यक्ति बनकर जीना चाहती है। उसकी यही चाहत विद्रोह की जमीन तलाशती है। इसी का चित्रण चित्रा जी ने अपनी नारी विषयक कहानियों में दिखाया है।

समाज और परिवार निर्माण मे अत्यंत साहयक सिद्ध बनता है। 'विवाह' संस्था। समाज और संस्कृति में इसे अत्याधिक महत्व दिया गया है। किंतु पुरुष प्रधान संस्कृति में इस संस्था में भी नारी के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार होता आया है। हालाँकी नारी इस संस्था में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निबाहती है। उसके त्याग, सेवा आदि भावनाओं

को नजर अंदाज कर उसपर किए जाने वाले दुर्व्यवहार को चित्रा जी ने चित्रित किया है। किंतु समाज में और परिवार में अपनी समानता की भावना रखनेवाली इस नारी को दाम्पत्य जीवन में पति के व्यवहार से विवश होकर जीवन यापन करने के अपेक्षा विद्रोह को अपना हाथियार समझकर चलनेवाली नारी को दिखाया है। वह अपने पारिवारिक जीवन में पति के व्यवहार विरूद्ध विद्रोह कर दाम्पत्य जीवन में समानता लाने का प्रयास करती है। चित्रा जी की यह नायिकाएँ अत्यंत नीडरता से अपने अधिकारों को प्राप्त करने का प्रयत्न करती है। दाम्पत्य जीवन में नारी के विद्रोही पक्ष को दिखाकर चित्राजी नी नारी के विचारों में आए परिवर्तन का दर्शन करवाया है।

नारी परिवार समाज के लिए महत्वपूर्ण ईकाइ होने के बावजूद उसे न समाज में समानता का स्थान मिला है और ना ही परिवार में वह दोनों जगह प्रताड़ित रही है। वह स्वयं अब अपना अधिकार चाहती है। समाज में समानता का स्थान प्राप्त करने का उसका प्रयास उसे विद्रोह के लिए प्रेरित करता है। नारी का यह सामाजिक जीवन संदर्भ में किया विद्रोह को चित्राजी ने अपनी कहानियों के माध्यम से दिखाया है। घर के बाहर समाज में शोषण, अनाचार, अत्याचार सहती नारी अपने साथ होने वाले अन्याय के विरूद्ध विद्रोह करती है। उसका विद्रोह न मात्र समाज के विरूद्ध है तो वह सामाजिक, पारंपरिक रूढ़ियों के विरूद्ध भी विद्रोह कर अपना क्रोध व्यक्त करती है। समाज के इर्द-गिर्द घटती हर घटना नारी का अपने जीवन और स्वाभिमान के लिए विद्रोह के लिए तत्परता चित्राजी ने अपने अनुभव विश्व से ही लिया है। समाजसेविका के रूप में कार्य करते समय देखी गई नारी की दशाएँ समाज में नारी का स्थान चित्रा जी को नारी-विद्रोह को व्यक्त करने के लिए प्रेरित करता गया है।

अपने साहित्य के माध्यम से समाज, परिवार और संस्कृति के हर एक पक्ष को उजागर करती चित्रा जी ने यथार्थ और सशक्त विचारों को विवेच्य कहानियों के माध्यम से दर्शाया है। 'केंचुल' और 'चर्चित कहानियाँ' यह दोनों कहानी-संग्रह उनके अन्य साहित्यिक कृतियों का दर्पण ही है। समाज में नजर आती वास्तविकता के साथ अपने स्वयं के विचारों को एक सशकत रूप देकर चित्रा जी ने इन कहानियों का सृजन किया है, यह कहना गलत

नहीं होगा। अपने साहित्य के माध्यम से उन्होंने समाज की दृष्ट रुढ़ियों, घातक परंपराओं को बदलने का प्रयास किया है। उनका यह प्रयास सर्वथा स्तुत्य है। समाज, परिवार से अपनी भावनिक कोमलता के साथ-साथ कर्तव्य अधिकार इन व्यक्तिगत धारणाओं से प्रभावित उनका साहित्य अपने चरित्रों, पात्रों के माध्यम से अपने विचार प्रकट करते हैं। अत्यंत निर्भिकता और नटस्थता से लिखा गया यह साहित्य अपनी अलग विशेषता स्वयं ही दर्शाता है। समाज पर प्रभाव करने वाले घटकों क साथ-साथ नारी का जीवन के प्रति बदलते संदर्भ का चित्रा जी ने अत्यंत सजगता से चित्रण किया है, जिसमें सदियों से अनाचार की छाया में पीड़ित नारी का भावनिक क्रंदन है, जो पाठकों को अंतर्मुख करता है। जीवन और यथार्थ से जुड़ा चित्रा जी का यह साहित्य अत्यंत सजग बना है, जो निरंतर परिवर्तन को जीवन की वास्तविकता मानने के लिए प्रेरित करता है।

उपलब्धियाँ :

1) विवेच्य विषय का अध्ययन करने के उपरांत यह स्पष्ट होता है कि नारी अस्मिता और नारी चेतना चित्राजी की कहानियों में विकसित होती जा रही है।

2) वर्तमान कालीन समाज में नारी के अधिकार का हनन रूक नहीं पाया है किन्तु शिक्षा के कारण नारी अब अपने अधिकार को भी जता रही है। विवेच्य कहानियों में अपने अधिकार के प्रति सजग रहकर विद्रोह करने वाली नारियाँ भी प्रस्तुत है। आनेवाली पीढ़ियों की नारी के लिए ये नारियाँ मिसाल साबित होगी इसमें संदेह नहीं।

3) अन्याय, अत्याचार और दमन के विरोध में नारी ने अपना मुख खोलना शुरू किया है। इतना ही नहीं तो विद्रोह करना भी उसने सीखा है। विवेच्य साहित्य को पढ़नेवाली कोई भी संवेदनशील नारी अन्याय के विरोध में निश्चय ही विद्रोह करेगी, विद्रोह की शक्ती पायेगी। प्रस्तुत अध्ययन की महत्वपूर्ण उपलब्धि मान्य होगी।

अनुसंधान की दिशाएँ :

चित्रा मुद्गल के कहानियों पर स्वतंत्र रूप से निम्नलिखित विषयों पर अनुसंधान किया जा सकता है।

1) चित्रा जी के कहानियों का शिल्पगत विवेचन

2) चित्रा जी के कहानियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

3) चित्रा जी के कथा-पात्रों का मनोवैज्ञानिक अनुशीलन।

उपर्युक्त विषय मुझे अध्ययन के पश्चात् प्राप्त हुए हैं जिनपर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान हो सकता है। वस्तुत: हर विषय की कोई अपनी सीमाएँ होती हैं। यहाँ मेरे शोध विषय की भी सीमा है।

❑❑❑❑